MAHD-05

December - Examination 2016

MA (Final) Hindi Examination

नाटक और कथेतर गद्य विधाएँ

Paper - MAHD-05

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 80**

निर्देश : इस प्रश्न–पत्र के तीन खण्ड हैं – 'अ', 'ब' और 'स'। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(खण्ड – अ) **8 × 2 = 16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य है। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(i) एक कंठ विषपायी के लेखक का नाम लिखिए।

(ii) ''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुध्द शुध्द भारती

स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती'' पंक्ति किस प्रसिध्द नाटक से ली गई है, तथा इसके नाटककार का नाम भी लिखिए।

(iii) रेषाचित्र किसे कहते है? स्पष्ट कीजिए।

(iv) भारतेन्दु युग के दो निबंधकारों का नाम लिखिए।

(v) ललित निबंध किसे कहते हैं। हिन्दी के दो ललित निबंधकारों का नाम लिखिए।

(vi) जीवनी की परिभाषा लिखिए।

(vii) गीति नाट्य से आप क्या समझते हैं। स्पष्ट कीजिए।

(viii) एक दुराशा के लेखक का नाम लिखिए।

(खण्ड – ब) $4 \times 8 = 32$

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों में से कोई चार प्रश्न कीजिए। शब्द सीमा लगभग 200 शब्द है। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है।

2) हिन्दी नाट्य परम्परा में भारतेन्दु हरिश्चंद के अवदान पर प्रकाश डालिए।

3) हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'अशोक के फूल' के कथ्य पर विचार कीजिए।

4) इतिहास के झरोखे से वर्तमान की संगति को दिखलाना ही प्रसाद के नाटकों का मूल ध्येय है। स्पष्ट कीजिए।

5) नाटक व रंगमंच के परस्पर संबंध को स्पष्ट कीजिए।

6) जीवनी से पूरा व्यक्तित्व प्रकाशित होता है। स्पष्ट कीजिए।

7) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''लोक में फैली दुख की छाया हटाने में ब्रहम की आनंद कला जो शक्तिमय रूप धारण करती है उसकी भीषणता में भी अद्‌भुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी आद्रता साथ लगी

रहती है। विरुध्दों का यही सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौन्दर्य है जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता।''

8) निम्नलिखित अंश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''मै रथ का टूटा पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत
क्या जाने कब इस
दुरुह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को
अकेले चुनौती देता हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाय।।''

9) निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए।

''परन्तु काम चाहे कैसा ही कठिन हो, शरीर चाहे कितना ही क्लांत रहा हो, मैने न कभी उसकी हंसी से आभाषित मुख मुद्रा में अन्तर पड़ते देखा और न कभी काम रूकते देखा। और इतने काम में भी उस अभागी का दिन द्रौपदी के चीर से होड़ लेता था। सबेरे स्नान, तुलसी पूजा आदि में कुंछ समय बिताकर ही वह अपने अंधेरे रसोईघर में पहुँचती थी। परन्तु दस बजते–बजते ससुर को खिला पिला कर उस टाट के परदे से मुझे शाम को आने का निमंत्रण देने के लिए स्वतंत्र हो जाती थी।''

(खण्ड – स) $2 \times 16 = 32$

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो का उत्तर दीजिए। शब्द सीमा अधिकतम 500 शब्द है। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

10) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' का निबंध के तत्त्वों के आधार पर विश्लेषण कीजिए।

11) 'अंधा युग' गीति नाट्य का विवेचन व विश्लेषण कीजिए।

12) कथेतर गद्य विधाओं पर एक लेख लिखिए।

13) नाटक में 'रंगमंच और अभिनेयता' पर प्रकाश डालिए।